समाजीकरण
(SOCIALIZATION)

मनुष्य एक जैविकीय प्राणी के रूप में जन्म लेता है। शारीरिक रूप से वह पशुओं से भिन्न मालूम पड़ता है परन्तु स्वाभाव एवं व्यवहार पशुओं के समान होता है। परन्तु वह समाज में रहकर बड़ा होता है अर्थात् उसका पालण पोषण समाज में होता है। परिवार, पड़ोस, क्रीड़ासमूह, स्कूल, विवाह तथा धर्म, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के द्वारा समाजिक सीख एवं इनके साथ परस्पर अन्तःक्रिया के माध्यम से मानव शिशु की पाशविक प्रवृत्तियों का दमन करके उसमें मानवी एवं समाजिक गुण विकसित कर दिये जाते हैं। अर्थात् उसे मानव अथवा एक समाजिक प्राणी बना दिया जाता है। समाजिक सीख की इसी प्रक्रिया को जिसके आधार पर मानव शिशु को पशुता से मानवता की ओर लाया जाता है समाजीकरण कहा जाता है।

मानव का व्यक्तित्व जन्म से ही पूर्ण नहीं होता बल्कि समाजिक सीख की लम्बी प्रक्रिया और अनुभवों के द्वारा उसमें व्यक्तित्व सम्बन्धी समाजिक गुणों का विकास हो जाता है परिवर्तन की इसी प्रक्रिया को समाजीकरण

Scanned with CamScanner

कहते हैं।

Gittler के शब्दों में "सामाजिक प्राणीकरण के लिए मनुष्य, जो आदतों, विश्वासों, कला, आकृति और स्थायी भावों आदि रूप, सीखना लक्षणों को प्राप्त करता रहता है, जो इस प्रकार व्यक्तियों, जिनमें वह समूह पाये जाते हैं की संगति में रहकर प्राप्त होते हैं।"

Robert Bierstedt के अनुसार "हम जन्म से मानव नहीं बल्कि सांस्कृतिक मानवों के साथ अपनी संगति हो जाने पर मानव बनते हैं।" इस प्रकार समाज में रहकर मानवीय व्यवहारों को ग्रहण करने या सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है। जैसा Harry Johnson ने यह विचार किया कि "समाजीकरण वह सीखना है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाएँ अदा करने योग्य बनाता है।"

Green के अनुसार "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्म और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।"

Bogardus ने भी इसे एक सामाजिक सीख की प्रक्रिया बताया है जिसके आधार पर आत्म नियंत्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संतुलित व्यक्तित्व का विकास होता है।

Kuppuswami ने इसे अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया बताया है जिसके द्वारा सामाजिक व्यवहार ग्रहण किया जाता है। Kimball Young, Fichler तथा और भी दूसरे बहुत से सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने इसको अपने अपने ढंग से परिभाषित किया है।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि समाजीकरण व्यक्ति और उसके समाज के बीच अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति ~~और उसके समाज के बीच अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया~~ अपने समाज द्वारा स्वीकृत मान्यताओं एवं मूल्यों को ग्रहण करके समाज का एक क्रियाशील उत्तरदायी सदस्य बन जाता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया अथवा अवस्थायें

H.M. Johnson ने समाजीकरण की प्रक्रिया के चार स्तरों की चर्चा की है।

(1) मौखिक अवस्था (Oral Stage) समाजीकरण की यह प्रथम अवस्था है। यह अवस्था जन्म से प्रारम्भ होकर लगभग एक डेढ़ वर्ष की आयु तक चलती रहती है। इस स्तर में बच्चा सम्पूर्ण परिवार से सम्बन्धित न रह कर केवल अपनी माता से सम्बन्धित रहता है। इस स्थिति को

Freud ने प्राथमिक परिचय कहा है।

(2) शौच अवस्था (Anal Stage) यह अवस्था डेढ़ वर्ष से लेकर लगभग तीन वर्ष की आयु तक चलती रहती है। इस अवस्था में बच्चे से यह आशा की जाती है कि वह थोड़ा बहुत स्वयं को संभाले और शौच सम्बन्धी आवश्यकता को किये आत्मनिर्भर हो। इस अवसर अवस्था में बच्चों को स्वीकृतया सही गलत की सीख प्राप्त होती है। वह अपने पारिवारिक सांस्कृतिक मूल्यों की सीख भी यहीं से प्राप्त करता है। उसमें अनुकरण की प्रवृत्ति जागृत होने लगती है।

(3) गुप्तावस्था (Latency Stage) यह अवस्था पाँचवें वर्ष से प्रारम्भ होकर युवा होने तक अर्थात बारह तेरह वर्ष की आयु तक रहती है। इस स्तर में बच्चे का सम्बन्ध पूरे परिवार के व्यक्तियों से हो जाता है। उसमें यौन भावना भी विकसित होने लगती है। इस स्तर पर उससे आशा की जाती है कि वह लिंग के अनुसार व्यवहार करे। इस अवस्था में जब बच्चा अपने लिंग के प्रति पूर्ण जागरूक हो जाता है तो विपरीत लिंग में उसकी रुचि बढ़ने लगती है।

(4) किशोरावस्था (Adolescence) समाजीकरण की यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में बालक और बालिकाएँ गंभीर तनावों का अनुभव करते हैं। इस समय बच्चों से यह आशा की जाती है कि वह अपने जीवन से

Scanned with CamScanner